



कृषि निर्यात लाभ



भारतीय निर्यात-आयात बैंक

आप हमें : www.eximbankagro.com पर देख सकते हैं।

अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, असमी, बंगाली, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, पंजाबी, तमिल और तेलुगू में प्रकाशित

मार्च 2005

खंड IV अंक II

विषय-सूची

- ★ खाद्य एवं पारिस्थितिकी प्रणाली हेतु जल पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, दि हेग 1
- ★ हूडिया- एक प्रति-मोटापा जड़ी-बूटी 2
- ★ जैव-सुरक्षा प्रोटोकॉल तथा कृषि व्यापार में इसका निहितार्थ 3-4
- ★ मारिशस : एक कृषि अर्थव्यवस्था 5
- ★ कटे हुए फूल तथा पर्णावली : यूरोपीय संघ में बाज़ार का विवरण 6-7
- ★ कृषि निर्यात क्षेत्र : अद्यतन जानकारी 8-9
- ★ किरणन प्रौद्योगिकी : एक आशुचित्र (स्नैपशॉट) 10-11
- ★ भारतीय आंचलिक खान-पान उत्पादों की निर्यात संभाव्यता 11
- ★ समाचार संकेन्द्रण 12

खाद्य एवं पारिस्थितिकी प्रणाली हेतु जल पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, दि हेग

बढ़ती जनसंख्या और कृषि पर अधिक उत्पादन करने के लिए बढ़ते ज़ोर ने जल, विशेषकर स्वच्छ जल की उपलब्धता पर दबाव डाला है। अच्छी कोटि के जल की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता, जैविक विविधता तथा पारिस्थितिकी प्रणाली के अनुरक्षण के लिए और प्राथमिक तथा गौण उत्पादन कार्यों के लिए एवं सभी जैविक प्रक्रियाओं के लिए आधारभूत है। दुर्लभ संसाधन जल की मांग तेज़ी से बढ़ रही है जो खाद्य उत्पादन के लिए इसकी उपलब्धता को चुनौती दे रही है और वैश्विक खाद्य सुरक्षा जोखिम में पड़ रही है। प्राकृतिक पारिस्थितिकी प्रणाली भी जल की उपलब्धता तथा गुणवत्ता में अनिवार्य भूमिका अदा करती है।

जल संसाधनों की दुर्लभता की इन स्थितियों के अंतर्गत अब 'कि क्या या क्यों' प्रश्न नहीं रह गया है बल्कि यह 'कैसे' है कि हम पारिस्थितिकी प्रणाली का निरंतर विकास प्राप्त करने के लिए जीविका के लिए कार्यक्षम ढंग से जल बचा सकते हैं।

लगभग 8.1 बिलियन लोगों के लिए खाद्यान्न उत्पन्न करने के लिए और खान-पान में परिवर्तन के अनुरूप चलने के लिए वैश्विक खाद्य उत्पादन में 2030 तक 60% की वृद्धि करनी होगी। अतएव कृषि के लिए जल की निकासी में इस अवधि के दौरान लगभग 14% की वृद्धि होने की आशा है। भविष्य में मुख्य चुनौती पानी का कम उपयोग करते हुए अधिक खाद्यान्न उत्पन्न करना होगा और साथ ही प्राकृतिक पारिस्थितिकी प्रणाली को संरक्षित करना होगा।

उपर्युक्त को देखते हुए, खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ ए ओ) और नीदरलैंड सरकार ने दि हेग, नीदरलैंड में 31 जनवरी, 2005 से 5 फरवरी, 2005 तक खाद्य एवं पारिस्थितिकी प्रणाली हेतु जल पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में 140 से अधिक देशों से मंत्रियों सहित प्रतिनिधिमंडलों ने भाग

लिया। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य प्रबंध प्रणालियों व्यावहारिक पाठों तथा आवश्यक समर्थकारी वातावरण की पहचान करने में सरकारों की सहायता करना है जो नदी घाटी स्तर पर पानी के निरंतर उपयोग और खाद्य उत्पादन तथा पारिस्थितिकी प्रणाली प्रबंधन के सामंजस्यीकरण की ओर ले जाता है।

एफ ए ओ के महा निदेशक के मुख्य भाषण में इस बात पर प्रकाश डाला गया था कि यह लगातार स्पष्ट हो गया है कि कृषि में, विशेषकर ग्रामीण आधारित अर्थव्यवस्थाओं में लगातार निवेश गरीबी उन्मूलन तथा आय उत्पन्न करने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। ये निवेश स्थानीय संसाधनों की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अधिक विविधीकृत तथा उच्च मूल्य योजित उत्पादों में होना चाहिए। अफ्रीका में न केवल सिंचाई प्रणालियों पर अधिक ज़ोर देने की आवश्यकता है बल्कि वर्षा पोषित कृषि कर स्थिरता को सुधारने की भी आवश्यकता है।

एफ ए ओ अध्ययन के अनुसार 2000-02 में विश्वभर में लगभग 852 मिलियन लोग भूख तथा कुपोषण के शिकार थे। यह भी अनुमान लगाया था कि भूख के वर्तमान स्तर से विकासशील देशों को कम से कम 500 बिलियन यू एस डॉलर का भारी खर्च उठाना पड़ रहा है जिसका प्रभाव आर्थिक कार्यकलापों पर पड़ रहा है।

सहस्राब्दि विकास लक्ष्य (एम डी जी) के अंतर्गत चुनौतियों तथा लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए, विशेषकर लक्ष्य एक, जिसका उद्देश्य 2015 तक भूख से पीड़ित व्यक्तियों की संख्या को आधे तक कम करना है और लक्ष्य सात जिसका उद्देश्य निरंतर विकास के सिद्धांतों को प्राकृतिक संसाधनों की हानि को उलटने के लिए देश की नीतियों के साथ एकीकृत करना है, संबंधित नीतियों को बदलने में सम्मेलन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है जिससे खाद्य सुरक्षा तथा संतुलित पारिस्थितिकी प्रणाली के लिए पानी तथा प्राकृतिक संसाधनों का निरंतर उपयोग हो सकेगा।



हूडिया - एक प्रति-मोटापा जड़ी-बूटी

हूडिया गार्डोनी (सामान्यतः हूडिया के नाम से प्रसिद्ध), ऐपोसिनैसी परिवार में गूदेदार पौधों का एक वंश, का प्रयोग दक्षिण अफ्रीका की सैन जनजाति द्वारा कठोर कालाहारी रेगिस्तान में लम्बी यात्राओं के दौरान अपनी भूख को कम करने के लिए हजारों वर्षों से किया जा रहा है। वे लम्बी आखेट सैरों के दौरान अपनी भूख तथा प्यास को दबाने के लिए तीखे हूडिया को दिन में दो बार चबाते थे। इस कैक्टस पौधे को 6 बिलियन यू.एस. डॉलर की बाज़ार संभाव्यता के साथ हाल ही में मोटापे के इलाज में कारगर पाया गया है। पत्तिरहित, स्पाइकी गूदेदार हूडिया दक्षिण अफ्रीका के उत्तरी केप प्रांत में प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होता है जहां इसे संरक्षित प्रजाति के रूप में दर्ज किया गया है। यह आश्चर्यजनक गूदेदार जड़ी-बूटी बोट्सवाना तथा नामीबिया के शुष्क क्षेत्रों में भी पैदा होती है। संकटग्रस्त प्रजाति अंतरराष्ट्रीय व्यापार सम्मेलन (सी.आइ.टी.ई.एल) ने अपनी परिशिष्ट II (अभी विलोपन के रूप में अनिवार्यतः संकट में नहीं लेकिन ऐसी हो सकने वाली प्रजातियां जब तक उनका नियंत्रित रूप में व्यापार नहीं किया जाता है) - में हूडिया पौधे को सूचीबद्ध किया है - जो दक्षिण अफ्रीका, नामीबिया तथा बोट्सवाना के आदेश पर प्रजातियों में वैश्विक व्यापार को विनियमित करेगा।



दक्षिण अफ्रीका में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सी.एस.आइ.आर.) ने हूडिया गार्डोनी से भूख दबाने के लिए एक सक्रिय संमिश्र (पी57) पृथक किया है। सी.एस.आइ.आर. ने यू.के. में एक कैम्ब्रिजशायर बायो-फार्मास्युटिकल कंपनी पाइटोफार्म को पी57 के और विकास के लिए तथा एक निरन्तर उत्पादन प्रणाली स्थापित करने के लिए अधिकार का लाइसेंस दिया है। बदले में पाइटोफार्म ने विकास तथा वैश्विक वाणिज्यीकरण के लिए विशाल कंपनी फाइजर कापॉरेशन को अधिकार उप-लाइसेंस पर दिया। फाइजर ने हाल ही में पाइटोफार्म को क्लिनिकल विकास अधिकार लौटा दिया है।

हूडिया की खेती

धीमी गति से बढ़ने वाले इन पौधों की खेती कठिन है क्योंकि इन्हें बढ़ने के लिए काफी उच्च तापमान की आवश्यकता पड़ती है। अतएव कालाहारी डिजर्ट कृषि के लिए आदर्श स्थान है। तथापि गूदेदार पौधे पूर्ण सूर्य या प्रकाश छाया तथा कमी पानी में अच्छी तरह से फलते-

फूलते हैं। इसे अच्छी जल-निकासी वाली लाल बालुई मिट्टी में बीजों तथा कलम के माध्यम से उपजाया जा सकता है तथा इसे पूरी तरह से तैयार होने में पांच से छः वर्ष का समय लग जाता है। किसान सामान्यतः कालाहारी तथा आस-पास के क्षेत्रों में लाल मिट्टी में पौधे को प्राकृतिक रूप से पैदा करते हैं। वर्तमान में दक्षिण अफ्रीका में (सी.एस.आइ.आर. के तत्वावधान में) खेती के परीक्षण चल रहे हैं और नामीबिया (नैशनल बोटैनिकल रिसर्च इंस्टिट्यूट) में भी छोटे पैमाने पर खेती का परीक्षण चल रहा है। वर्तमान में, कृष्य सामग्री से बहुत कम मात्रा में सामग्री की फसल ली गई है।

उपयोग

हूडिया की औषधीय उपयोग की चार प्रजातियां ज्ञात हैं। अधिकांश हूडिया प्रजातियों को खाद्य पदार्थ के रूप में खाया जाता है, कांटे छीले जाते हैं और इसे ककड़ी की तरह खाया जाता है। वे खाद्य के पर्याप्त न होने पर कठोर रेगिस्तान दशाओं में खाद्य की अत्यधिक आवश्यकता आपात आपूर्ति करते हैं।

हूडिया गार्डोनी को आहार के रूप में ताज़ा खाया जाता है और पाचक त्रण के संकेतक पेट दर्द में इसका औषधीय रूप में उपयोग किया जाता है। हूडिया करोजी, जिसे आहार के रूप में भी खाया जाता है, भूख शांतिकारक के रूप में कार्य करता है और अपाचन, हाइपरटेंशन, मधुमेह तथा पेट-दर्द के इलाज में भी इसका प्रयोग होता है। हूडिया फ्लैवा (पीले फूल का धाप), ताज़े खाद्य पदार्थ के रूप में प्रयोग के अलावा, प्यास तथा क्षुधा शांतिकारक के रूप में भी कार्य करता है। हूडिया ऐफीसिनैलिस का प्रयोग फुफ्फुसीय तपेदिक तथा हेमोरायड्स के इलाज में भी किया गया है।

पी57 कैसे कार्य करता है?

भोजन के अन्तर्ग्रहण के साथ रक्त में ग्लूकोज का स्तर बढ़ जाता है और व्यक्ति के मस्तिष्क की नसें भूख की पूर्णता का संकेत भेजना शुरू कर देती हैं। अनुसंधान से प्रकट होता है कि हूडिया गार्डोनी में पी57 अणु ग्लूकोज के समान है किन्तु ग्लूकोज से लगभग 10,000 गुना सक्रिय होता है। वैज्ञानिकों का विश्वास है कि पी 57 अणु, इस प्रभाव का अनुकरण करते हुए कार्य करता है कि ग्लूकोज की मस्तिष्क में कोई नस कोशिका नहीं होती है, परिणामस्वरूप शरीर में पूर्ण रूप में चिन्तन होता है, उस समय भी जब यह नहीं होता है, इस प्रकार क्षुधा पर रोक लगती है। मोटापाग्रस्त व्यक्तियों में वजन की कमी के इस गुण ने वैज्ञानिकों को हूडिया को वजन कम करने की गोली के हर्बल प्रतिस्थापन के रूप में विचार करने के लिए प्रेरित किया है।

संदर्भ:

- वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सी.एस.आइ.आर.) दक्षिण अफ्रीका
- <http://www.thehoodiareport.com/>

जैव-सुरक्षा प्रोटोकॉल तथा कृषि व्यापार में इसका निहितार्थ

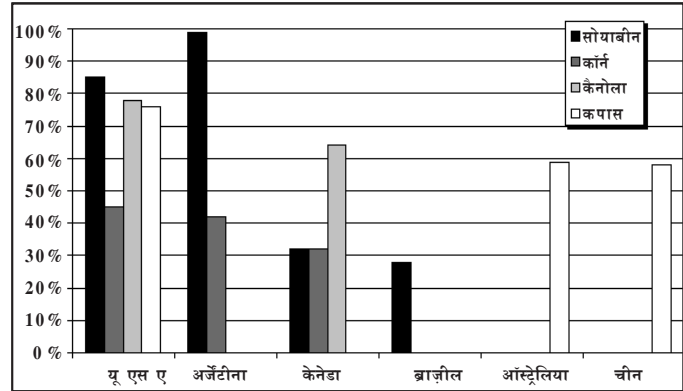
कृषि जिंसों (कमोडिटी) की सीमापार आवा-जाही को प्रभावित करने वाला एक नया अंतरराष्ट्रीय करार-जैव-सुरक्षा प्रोटोकॉल-(बी एस पी) सितंबर 2003 में प्रभावी हुआ। प्रोटोकॉल ऐसे किसी जीवित संशोधित जीव (एल एम ओ) की सीमापार आवा-जाही पर फोकस करता है जो जैविक विविधता के संरक्षण तथा निरंतर प्रयोग को नुकसान पहुंचा सके। “जीवित संशोधित जीव” (एल एम ओ) तथा “आनुवंशिक रूप से संशोधित जीव” या जी एम ओ के बीच यह अंतर है कि एल एम ओ पुनः उत्पादन करने में सक्षम हैं जबकि जी एम ओ सक्षम नहीं है, यदि वे पहले से ही संसाधित या परिष्कृत हैं। यह एक महत्वपूर्ण अंतर है क्योंकि बी एस पी सिर्फ एल एम ओ पर लागू होता है, न कि संसाधित संशोधित जिंसों पर।

प्रोटोकॉल के अंतर्गत, किसी देश को वातावरण में प्रवेश के लिए आशयित जीवित जीवों तथा बायोटेक बीजों का निर्यात करने वाले देशों से अग्रवर्ती संसूचित करार (ए आइ ए) के माध्यम से पूर्व अधिसूचना आवश्यक होती है। इसके अलावा इसके लिए एक गहन जोखिम आकलन के साथ खाद्य, चारा तथा फार्मास्युटिकल्स का पोतलदान वहन करने वाले एल एम ओ (एल एम ओ-एफ एफ पी) पर पर्याप्त नामपत्रण (लेबलिंग) की आवश्यकता होती है। यह एक जैव-सुरक्षा समाशोधन गृह की भी स्थापना करता है जिससे देश एल एम ओ के बारे में वैज्ञानिक, तकनीकी, पर्यावरण तथा विधिक सूचना का आदान-प्रदान कर सकते हैं। समाशोधन गृह सहभागी देशों की नियामक अपेक्षाओं तथा ऐसे निर्णय के 15 दिन के भीतर सरकार द्वारा देशी स्तर पर एल एम ओ जिंसों के अंगीकरण पर अधिप्रमाणित सूचना भी प्रदान करनी चाहिए।

प्रोटोकॉल तथा वैश्विक फसल उत्पादन और व्यापार

विश्व कृषि उत्पादन तथा व्यापार में आठ फसलों अर्थात् गेहूँ, मक्का, चावल, सोयाबीन, जौ, सार्धूम, कपास तथा कैनोला का प्रमुख स्थान है और सात देश अर्थात् अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राज़ील, केनेडा, चीन, यूरोपीय संघ तथा यू एस ए सभी मुख्य फसलों में समस्त निर्यात के 60-90% की आपूर्ति करते हैं। जबकि आयातकों के विशाल समुदाय में विकासशील देश शामिल हैं। सभी सात देशों ने आठ में से चार फसलों अर्थात् मक्का, सोयाबीन, कपास तथा कैनोला में एल एम ओ को गहन रूप से अपनाया है। इनमें से कुछ फसलों में, निर्यातक देशों में कुल उत्पादन का 80% तक आनुवंशिक रूप से संशोधित किस्में हैं। चूंकि एल एम ओ का अंगीकरण तथा प्रयोग मुख्य फसलों तथा प्रमुख व्यापारिक देशों में हुआ है, बी एस पी के अंतर्गत वर्तमान कृषि जिंस व्यापार का एक बड़ा हिस्सा शामिल है और इसके बढ़ने की संभावना है क्योंकि एल एम ओ भविष्य में व्यापक रूप से व्यापार की जाने वाली अन्य कृषि जिंसों में लागू किया जाएगा। आनुवंशिक रूप से संशोधित किस्मों के बिना जिंसों में भी व्यापार के फलस्वरूप प्रोटोकॉल द्वारा प्रभावित होगा।

प्रमुख निर्यातक देशों द्वारा विभिन्न फसलों में एल एम ओ का अंगीकरण



बी एस पी के संभावित प्रभाव कृषि जिंसों के लिए वैश्विक विपणन श्रृंखला पर इससे होने वाले परिवर्तनों से निर्धारित किये जाएंगे। एल एम ओ - एफ एफ पी के लिए बी एस पी के कार्यान्वयन से पहले, समाधान किये जाने वाले प्रमुख मुद्दों में शामिल हैं:

- दस्तावेज़ीकरण का प्रकार तथा नामपत्रण आवश्यकता
- निर्यात तथा आयात बिन्दु पर परीक्षण
- एल एम ओ की ‘अपस्थानिक उपस्थिति’ के लिए कार्यकारी परिभाषा तथा गैर-एल एम ओ पोतलदान में एल एम ओ की अनभिप्रेत उपस्थिति के लिए अवसीमा
- वैश्विक फसल उत्पादन तथा व्यापार की लागत तथा संरचना पर प्रभाव
- किसानों पर प्रभाव

नामपत्रण (लेबल लगाना)

सरकार द्वारा लिये जाने वाले निर्णय के आधार पर, प्रोटोकॉल के वर्तमान कार्यान्वयन के अंतर्गत, एल एम ओ-एफ एफ पी के निर्यातक को निर्यात कार्गो पर सूचित करना होगा कि “इसमें एल एम ओ हो सकता है”। कुछ देशों में प्रोटोकॉल निर्यात कार्गो में मौजूद एल एम ओ की पहचान तथा मात्रा पर विनिर्देशन की अपेक्षा करता है। परिरक्षित गैर-एल एम ओ को प्राप्त तथा पहचान करने की दिशा में पर्याप्त प्रयास के अभाव में और प्रमुख निर्यातक देशों में एल एम ओ के प्रचलन को देखते हुए, निर्यात पोत में उत्पादन में अनुपात पर ध्यान दिये बिना एल एम ओ अन्तर्निहित होना। चूंकि एक विशिष्ट निर्यात पोत में एक निर्दिष्ट देश में विभिन्न राज्यों से उत्पाद होते हैं, एल एम ओ की सही मात्रा और अलग-अलग एल एम ओ किस्मों का हिस्सा उस विशिष्ट देश में जिस की उत्पत्ति के आधार पर एक पोत से दूसरे पोत में काफी भिन्न होगी।

निर्यात टर्मिनल पर परीक्षण

लेबलिंग, जो निर्यात टर्मिनल के परीक्षण में सफल होने के लिए निर्यातकों को निर्यात कार्गो का एक सुव्यवस्थित कार्गो परीक्षण करना होगा और कार्यान्वयन निर्णयों के आधार पर परीक्षण की लागत अधिक हो सकती

कृषि निर्यात लाभ

है। उदाहरण के लिए, यू एस ए तथा अर्जेंटीना (एल एम ओ मक्के के दो सबसे बड़े उत्पादक तथा निर्यातक) से मक्के के सभी 3,575 निर्यात कार्गो की लदाई पर एकबारीय नमूना, परीक्षण तथा 'इसमें एल एम ओ हो सकता है' के रूप में कार्गो की लेबलिंग की लागत 1 मिलियन यू एस डॉलर आयेगी। एल एम ओ की पहचान के लिए लागत दुगुनी होकर 2.3 मिलियन यू एस डॉलर से अधिक हो जाती है और पहचान तथा परिमाणन के लिए लागत चौगुनी बढ़कर 4.4 मिलियन यू एस डॉलर हो जाएगी। निरूपक नमूना सुनिश्चित करने के लिए अधिक गहन परीक्षण से लागत 18 मिलियन यू एस डॉलर से तेज़ी से बढ़कर 87 मिलियन यू एस डॉलर हो जाएगी। अन्य अनुपालन लागतों (प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष) में अतिरिक्त संचालन, ऊपरि खर्च शामिल हैं और भाड़े, ब्याज दरों तथा विनिमय दरों में अस्थिरता के साथ अनाज व्यापार में लचीलेपन तथा प्रतिमोच्यता की हानि फसल विपणन शृंखला में आपरेटों के सामने आने वाले मूल्य जोखिम को और बढ़ावा देगी।

आयात टर्मिनल में परीक्षण

एल एम ओ आयात करने का केन्द्रीय कार्यान्वयन मुद्दा आयातक देशों में एल एम ओ कार्गो के अंगीकरण तथा स्वीकार्यता की सीमा है। 1 मिलियन से 87 मिलियन यू एस डॉलर के बीच प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष लागतें आसानी से दुगुनी हो जाएंगी यदि सुपुर्दगी पर कार्गो का इसी प्रकार का नमूना तथा परीक्षण किया जाता है। एक सांखिकीय प्रक्रिया होने के कारण परीक्षण विभिन्न टर्मिनलों में भिन्न-भिन्न होने की संभावना है। पुनःपरीक्षण की आवश्यकता से जहाज को रोकना पड़ेगा या अन्य स्थान पर ले जाना पड़ेगा। कार्गो के आकार, आयात स्थान तथा पड़व अवधि के आधार पर पोर्ट प्रभार, परिवहन लागत, गुणवत्ता खराबी तथा बीमा एक जहाज के लिए खर्च को कई मिलियन डॉलर तक बढ़ा सकती है। इसके अलावा, कार्गो के अस्वीकार होने का अंतरराष्ट्रीय जोखिम तीव्र गति से बढ़ जाएगा यदि प्रवर्तन पूर्णतः परीक्षण परिणाम पर निर्भर करता है। निर्यात तथा आयात बाज़ारों में एल एम ओ अनुमोदनों में अनिरन्तरता के कारण अवसीमाओं में अंतर के प्रत्युत्तर में ये जोखिम भी असंगत रूप में बढ़ सकते हैं।

अवसीमा

एल एम ओ से बचने के इच्छुक आयातक गैर-एल एम ओ पोतलदान की संविदा कर सकते हैं जिसके लिए पूरी बाज़ार शृंखला के दौरान कठोर पहचान परिरक्षण अपेक्षित है। विशुद्धता मानक, अपस्थानिक सह-मिश्रण के लिए अवसीमा, पहचान परिरक्षण प्रणाली के मान तथा निर्यातक देश में एल एम ओ उत्पादन के मान के आधार पर, लागत बेतरतीब बढ़ सकती है। वर्तमान गैर-एल एम ओ बाज़ार के आकार और पांच-प्रतिशत की अवसीमा के साथ गैर-एल एम ओ सोयाबीन के लिए पहचान परिरक्षण प्रणाली पण्य की लागत में 8 यू एस डॉलर प्रति मीट्रिक टन जोड़ती है। जब कि एक से दो प्रतिशत अवसीमा 25 यू एस डॉलर प्रति टन जोड़ती है। गैर-एल एम ओ मक्के की सोरिंग की लागत पांच प्रतिशत अवसीमा के साथ 10 यू एस डॉलर आती है। अतएव दो स्वस्थ

बाज़ारों में दो गैर एल एम ओ जिंसों की पहचान-परिरक्षण की लागत जिंसों की वास्तविक लागत के अलावा 100 यू एस डॉलर प्रति वर्ष पहुँच जाती है। गैर-एल एम ओ जिंसों के हिस्से तथा / या अवसीमा में थोड़े से बाज़ार उतार-चढ़ाव के मामले में लागतें बहुत अधिक बढ़ सकती हैं।

प्रोटोकाल का वर्तमान तथा भविष्य

जैव-सुरक्षा प्रोटोकॉल के अंतर्गत आयातक एल एम ओ की उन किस्मों के प्रवेश को मना कर सकते हैं जिन्हें देशी बाज़ार में अनुमोदित किया गया है। आज की तारीख तक सिर्फ उन्नीस देशों ने नियामक प्रणाली स्थापित की है और एल एम ओ के लिए आयात का अनुमोदन किया है। तथापि, प्रमुख निर्यातक देशों में अनुमोदित एल एम ओ किस्में प्रमुख आयातक बाज़ारों में अनिवार्यतः अनुमोदित नहीं हैं। अनुमोदित न की गई किस्मों को निर्यात शृंखला से बाहर रखना कठिन हो गया है। विश्व भर में खेत-खलिहानों से उपभोक्ताओं तक अनाजों की आवा-जाही में अन्तर्विष्ट विशाल तथा बोझिल इन्फ्रास्ट्रक्चर को देखते हुए अपस्थानिक सह-मिश्रण कठोर आइ पी सिस्टम में भी वस्तुतः गारंटी है। यदि प्रोटोकॉल के कार्यान्वयन के फलस्वरूप प्रमुख आयातकों में अनुमोदित तथा गैर-अनुमोदित किस्मों की अलग-अलग सूचियों के साथ अधिक खंडित प्रणाली उत्पन्न होती है, व्यापार पर प्रभाव तथा परिणामस्वरूप लागतें बहुत उच्च हो सकती हैं। अंततोगत्वा, आयातक देश के उपभोक्ताओं को इनमें से अधिकांश लागतों को अदा करना पड़ेगा। खाद्य तथा चारे के आयात की भारी मात्रा वाले देशों को अनुपालन लागत का बड़ा हिस्सा अदा करना पड़ेगा और छोटी मात्रा वाले विकासशील देश आयातक प्रति टन उच्च प्रति यूनिट लागत अदा करेंगे क्योंकि जहाज अनुपालन लागतें मुख्यतः निश्चित होती हैं। उन्हें लागतों के असंगत हिस्से की भी अदायगी करनी पड़ सकती है क्योंकि उनके पास प्रोटोकॉल को कार्यान्वित तथा लागू करने के लिए पर्याप्त नियामक व्यवस्था तथा परीक्षण सुविधाओं का अभाव है। चूंकि लागतें स्थिर नहीं हैं, भविष्य में, एल एम ओ संख्या, किस्मों तथा निर्यातक देशों में अंगीकरण में वृद्धि, एक निर्दिष्ट बीज में विशेषताओं की संख्या में वृद्धि और न्यूनतर स्तरों पर भी खोज करने में समर्थ परीक्षण प्रौद्योगिकी में सुधार से कार्यान्वयन लागतें बढ़ने की संभावना है।

इसके अलावा, विश्व व्यापार संगठन तथा प्रोटोकाल द्वारा अपनायी गई परस्पर विरोधी स्थितियां अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भ्रम उत्पन्न कर सकती हैं क्योंकि विश्व व्यापार संगठन के एक खंड में यह उल्लेख है कि कोई अन्य बहुपक्षीय करार इस पर पूर्ववर्तिता नहीं रख सकता है। तथापि, जैव सुरक्षा प्रोटोकॉल में विरोधात्मक रूप में एक ओर यह शामिल है कि मौजूदा करारों के अंतर्गत अधिकार तथा दायित्व अपरिवर्तित हैं, किंतु दूसरी ओर यह उल्लिखित है कि प्रोटोकॉल अन्य अंतरराष्ट्रीय करारों के अधीनस्थ नहीं हैं।

संदर्भ:

- अंतरराष्ट्रीय खाद्य एवं कृषि व्यापार नीति परिषद (आइ पी सी), वाशिंगटन डी. सी.
- जैविक विविधता पर सम्मेलन, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम
- खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ ए ओ)

मारिशस : एक कृषि अर्थव्यवस्था

मारिशस के पास एक विशाल सुव्यवस्थित कृषि है जिसमें गन्ने की खेती और चीनी के उत्पादन तथा प्रसंस्करण की प्रमुखता है। विविधीकरण के बावजूद चीनी अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। कुल कृष्य भूमि के 90 प्रतिशत से अधिक हिस्से में गन्ने की खेती होती है। तथापि सकल देशी उत्पाद में चीनी उद्योग का हिस्सा 1983 के 9.5 प्रतिशत से घटकर 2001-03 में लगभग 3.5 प्रतिशत हो गया। कुल निर्यात के प्रतिशत के रूप में चीनी तथा शीरे की आय में भी अस्सी के दशक के 30 प्रतिशत से घटकर 2001 में लगभग 18 प्रतिशत रही गयी।

चीनी उद्योग को सुस्थापित विपणन, अनुसंधान, सूचना तथा बीमा नेटवर्क का फायदा है जो किसानों को गन्ने के उत्पादन में लगे रहने के लिए प्रोत्साहित करता है। मारिशस की अधिकांश चीनी गारंटित मूल्यों पर बेची जाती है जो हाल के वर्षों में विश्व मुक्त बाज़ार मूल्यों से अधिक रहा है और शेष चीनी खुले बाज़ार में बेची जाती है। 1998-99 से मारिशस को लोम कन्वेंशन (अब कोटोनाउ कन्वेंशन द्वारा प्रतिस्थापित) के अंतर्गत यूरोपीय संघ, विशेषकर यू के को निर्यात के लिए लगभग 507,000 टन का कोटा प्राप्त है। अन्य प्रमुख बाज़ारों में संयुक्त राज्य (जिसने भी गारंटित मूल्य ऑफर किया है)। केनेडा तथा न्यू ज़ीलैंड शामिल हैं। गारंटित मूल्य ने विश्व बाज़ार में घट-बढ़ से मारिशस को काफी संरक्षण प्रदान किया है हालांकि दीर्घकाल में अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में लगातार अधिक उत्पादन से कीमतों में गिरावट की प्रवृत्ति की संभावना है।

कृषि मंत्रालय, मारिशस सरकार ने चीनी क्षेत्र के विविधीकरण तथा युक्तिसंगत बनाने, देशी मूल्य निर्धारण व्यवस्था, श्रम आवश्यकता तथा संबंध और खोई से बिजली उत्पादन के उद्देश्य से 2001-05 के लिए एक चीनी क्षेत्र रणनीतिक योजना (एस एस एस पी) घोषित की है। योजना का प्रयास देश में चीनी उत्पादन की लागत को कम करना है जो क्षेत्र के अन्य उत्पादकों की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक है।

चाय इस प्रायद्वीप का दूसरा महत्वपूर्ण कृषि निर्यात है। यह साठ के दशक के उत्तरार्द्ध में और सत्तर के दशक के प्रारंभ में अग्रिम पंक्ति में रहा जब कृषि क्षेत्र को विविधीकृत करने के प्रयास शुरू किये गये थे। तथापि नब्बे के दशक के मध्य तक चाय भूमि को गन्ना उत्पादन में परिवर्तित करने और काशतकारों को छोटी इकाइयों में पट्टे पर देने से इस क्षेत्र में गिरावट आयी। यह मुख्यतः सरकार के आदेश पर था जिसने चाय को चीनी तथा उच्च लाभ मार्जिन और उत्पादकता वाली

अन्य फसलों से प्रतिस्थापित करने के लिए एक प्रमुख योजना शुरू की। चाय की कीमतें लगातार कम रही हैं जबकि श्रम की कमी और निविष्टियों की ऊंची लागत ने इस क्षेत्र की समस्याओं को और भी बढ़ा दिया है। चाय निर्यात का मूल्य तथा मात्रा सत्तर के दशक के उत्तरार्द्ध से नब्बे के दशक के उत्तरार्द्ध तक गिरकर अपने न्यूनतम स्तर पर आ गया। चाय का उत्पादन 1998 के 7,393 टन से घटकर 2000 में 6,440 टन पर आ गया किंतु पिछले कुछ वर्षों से लगातार बढ़ रहा है और यह 2003 में 6,973 टन के स्तर पर पहुंच गया। प्राथमिक उत्पादों से सेवा उन्मुख अर्थव्यवस्था की जाने की सरकारी पहल को देखते हुए चाय उत्पादन मारिशस की अर्थव्यवस्था के लिए परिधीय बने रहने की संभावना है।

अन्य फसलें महत्वपूर्ण नहीं हैं तथा प्रायद्वीप गेहूं, चावल या दूध में आत्मनिर्भर नहीं है। पुष्पोत्पादन तथा बड़े झींगों के लिए मत्स्यपालन हाल के कार्यकलाप हैं जिन्होंने निर्यात की कुछ मात्रा उत्पन्न की है। हालांकि मत्स्य उत्पादन में पिछले कुछ वर्षों में उतार-चढ़ाव रहा है और यह 1993 के 19,602 टन से वर्ष 1999-2003 के दौरान औसत 8,984 टन रहा, मारिशस के मत्स्य उद्योग में इसके लम्बे समुद्री क्षेत्र के चलते विशाल संभाव्यता है।

मारिशस में उपभुक्त 80 प्रतिशत से अधिक डेरी उत्पाद तथा 90 प्रतिशत गोमांस आयात किया जाता है। 1985 में स्थापित राष्ट्रीय डेरी बोर्ड दुग्ध उत्पादन को प्रोत्साहन दे रहा है किंतु दूध के उत्पादन में कोई महत्वपूर्ण वृद्धि नहीं हुई है। सूअर का मांस तथा पोल्ट्री उत्पादन स्थानीय मांग पूरी करने के लिए पर्याप्त हैं।

विविधीकरण को बढ़ावा देने तथा आधुनिक कृषि के उद्देश्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से सरकार ने गैर-चीनी क्षेत्र 2003-07 के लिए भी एक रणनीतिक योजना शुरू की है। इस रणनीति का मुख्य घटक कृषि में पारंपरिक पद्धतियों से अधिक परिष्कृत, प्रौद्योगिकी आधारित दृष्टिकोण की दिशा में परिवर्तन को बढ़ावा देना है।

संदर्भ:

- कृषि मंत्रालय, खाद्य प्रौद्योगिकी एवं प्राकृतिक संसाधन, मारिशस सरकार
- खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ ए ओ)

कटे हुए फूल तथा पर्णावली : यूरोपीय संघ में बाज़ार का विवरण

पिछले कुछ दशकों में कटे हुए फूलों की मांग में काफी वृद्धि हुई है और विशेष अवसरों पर प्रयोग के परे निकलकर मध्यम तथा ऊपरी आय वर्ग के घरों में एक नियमित सजावटी विशेषता बन रही है। कटे हुए फूलों तथा पर्णावली के लिए सबसे बड़े बाज़ार के रूप में यूरोपीय संघ विश्व के फूलों का 50% से अधिक उपभोग करता है और कई देशों में कटे हुए फूलों की प्रति व्यक्ति अपेक्षाकृत उच्च खपत है। कुल खपत की दृष्टि से जर्मनी सबसे बड़ा उपभोक्ता है, इसके बाद यू के, फ्रांस तथा इटली का स्थान है, जबकि कटे हुए फूलों तथा पर्णावली की प्रति व्यक्ति खपत दि नीदरलैंड में सर्वाधिक है, इसके बाद बेल्जियम, ऑस्ट्रिया तथा यू के का स्थान है।

यूरोपीय संघ का कटे हुए फूलों तथा पर्णावली का निर्यात या तो एक थोक विक्रेता के माध्यम से या नीलामी के माध्यम से किया जा रहा है। नीदरलैंड की नीलामी देशी तथा अन्य यूरोपीय बाज़ारों दोनों के लिए फूलों के व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इन्हें यूरोपीय संघ में कटे हुए फूलों की सर्वाधिक बिक्री वाली प्रजातियों के लिए एक संकेतक माना जाता है जो कुल यूरोपीय खपत में उनके सर्वाधिक बाज़ार हिस्से के कारण है। गुलाब नीदरलैंड की नीलामियों में बिकने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण कटा हुआ फूल है और इसके बाद डेंड्रैनथेमा, टुलिपा तथा लिलियम का स्थान है।

तालिका : नीदरलैंड नीलामी केन्द्रों में वर्ष 2003 में बेचे गये कटे हुए फूलों की शीर्ष 15 प्रजातियां (€ मिलियन)

	2003	% परिवर्तन 2002-2003
गुलाब (रोजा)	681	-2.6
डेंड्रैनथेमा इंड जी आर पी टी आर	299	-2.6
टुलिपा	186	8.6
लिलियम	160	-4.8
जरबेरा	106	-1.7
सिम्बिडियम	66	-0.7
फ्रीसिया	60	-3.0
एंथुरियम	43	2.6
अलस्ट्रोमेरिया	40	-10.1
डेंड्रैनथेमा इंड जी आर पी जी ई	38	7.5
जिप्सोफिला	37	-7.4
डायनथस	35	-21.4
यूस्टेमा रुसेलिनम	34	-7.1
हाइपेरीकम	31	-13.1
जैटेडेशिया	30	-2.6
अन्य	483	
कुल	2,330	-2.6

खपत का स्वरूप तथा प्रवृत्तियाँ

यूरोपीय उपभोक्ता विभिन्न प्रयोजनों के लिए फूलों की खरीद करते हैं। क्रेताओं के खपत व्यवहार से पता चलता है कि फूल खरीदने का उद्देश्य मुख्यतः उन्हें उपहार (लगभग 50-60%) के रूप में देना है। लगभग

15% फूलों की खरीद अन्त्येष्टि के लिए की जाती है और लगभग 20% फूल घरों के देदीप्तमान बनाने तथा एक खुशनुमा माहौल उत्पन्न करने के इरादे से स्वयं के उपयोग के लिए खरीदे जाते हैं।

हालांकि, जर्मनी तथा नीदरलैंड जैसे बड़े बाज़ारों में कटे हुए फूलों तथा पर्णावली की बिक्री संतृप्ति बिन्दु का संकेत दे रही है, यूरोपीय संघ में कटे हुए फूलों की समग्र खपत लगातार बढ़ रही है। जर्मनी के स्वास्थ्य, पर्यावरण तथा लागत सचेत बाज़ार में वर्ष 2000 में कटे हुए फूलों की बिक्री में तेज़ी रही है और यह • 3.1 बिलियन से अधिक रही है। जर्मनी की लगभग 60% जनसंख्या कटे हुए फूल खरीदते हैं। गुलाब एकल-गुच्छ के रूप में खरीदे जाने वाला अग्रणी कटा हुआ फूल है। इसके बाद टुलिपा, कार्नेशन, जरबेरा, तथा क्रिसैथेमम का स्थान है। पिछले दशक में यू के बाज़ार में कटे हुए फूलों तथा पर्णावली की खपत दुगुनी हो गयी है जिसमें सकल गुच्छों (51%) तथा मिश्रित बुके (40%) का प्रमुख योगदान रहा है। कार्नेशन अग्रणी एकल-गुच्छ फूल है। इसके बाद रोजा, डेंड्रैनथेमा, लिलियम, टुलिप तथा फ्रीसिया का स्थान है। यद्यपि नीदरलैंड में कटे हुए फूलों तथा पर्णावली का व्यापार लगभग स्थिर हो चुका है, उपभोक्ता उच्च मूल्य के फूलों जैसे मिश्रित बुके की ओर अपना रुख बढ़ा रहे हैं। फ्रांस तथा स्पेन में कटे हुए फूलों की खपत लगातार बढ़ रही है जबकि इतालवी खपत में 2001 से 2003 के बीच 7% की गिरावट आयी है। सकल-गुच्छ फ्रांस तथा स्पेन में सर्वाधिक बिक्री वाला रूप है जिनका क्रमशः 38% तथा 48% हिस्सा है और मिश्रित फूलों के बुके की इटली में सर्वाधिक बिक्री होती है जिसका 36% हिस्सा है। मिश्रित बुके 32% हिस्से के साथ स्पेन में लगातार लोकप्रिय हो रहे हैं।

यूरोपीय संघ 25 में शामिल किये गये नये देशों ने कटे हुए फूलों की खपत में वृद्धि प्रदर्शित की है। पांच शीर्ष देशों (पोलैंड, हंगरी, चेक गणराज्य, स्लोवाकिया तथा स्लोवेनिया) में कटे हुए फूलों का फूल बाज़ार प्रति व्यक्ति • 9 की खपत के साथ • 597 मिलियन अनुमानित है। बढ़ती आय को देखते हुए और 4% की आर्थिक वृद्धि को मानते हुए यह आशा की जाती है कि कटे हुए फूलों की खपत इन देशों में बढ़ेगी। क्षेत्र में सबसे बड़ा बाज़ार, पोलैंड, 2005 में 30% बढ़कर • 380 मिलियन हो जाने की आशा है।

आयात

यूरोपीय संघ कटे हुए फूलों तथा पर्णावली का अग्रणी आयातक है। इसका कुल आयात 2003 में • 3.1 बिलियन रहा जो 2001 से 2% कम है। यू के सबसे बड़ा आयातक है जिसका कुल यूरोपीय संघ आयात में 26% हिस्सा है। इसके बाद जर्मनी (25%), नीदरलैंड (15%) तथा फ्रांस (14%) का स्थान है। वर्ष 2003 में कटे हुए फूलों तथा पर्णावली के कुल यूरोपीय संघ आयात में से 78% आयात अन्य यूरोपीय संघ देशों से आयात शामिल है और सिर्फ 22% यूरोपीय संघ के सदस्य देशों के बाहर से आयात लिया गया था। जहां तक अतिरिक्त यूरोपीय संघ आयात का संबंध है, नीदरलैंड अग्रणी आयातक था जिसका मूल्य तथा मात्रा दोनों दृष्टियों से लगभग 60% हिस्सा था। नीदरलैंड कटे हुए फूलों तथा पर्णावली की आपूर्ति (निर्यात तथा पुनः निर्यात) के लिए यूरोपीय संघ

बाज़ार के लिए एक केन्द्र के रूप में कार्य करता है। यूरोपीय संघ से बाहर कटे हुए फूलों तथा पर्णावली का दूसरा सबसे बड़ा आयातक 2003 में 116 मिलियन के साथ यू के था, इसके बाद जर्मनी (• 73 मिलियन) और इटली (• 30 मिलियन का स्थान था)। नीदरलैंड 2003 में अन्य यूरोपीय सदस्य देशों को कटे हुए फूलों तथा पर्णावली का मुख्य आपूर्तिकर्ता था जिसका मूल्य की दृष्टि से लगभग • 2.2 बिलियन था कुल आयात का 70% हिस्सा था। नीदरलैंड के अलावा यूरोपीय संघ को कटे हुए फूलों के अन्य प्रमुख आपूर्तिकर्ताओं में केन्या (सबसे बड़ा गैर यूरोपीय संघ आपूर्तिकर्ता), कम्बोडिया, इज़्राइल, स्पेन, एक्वाडोर तथा ज़िम्बाब्वे शामिल हैं। अग्रणी आपूर्तिकर्ता देशों में से सिर्फ केन्या ने 2001 से 2003 के बीच अपनी आपूर्ति को लगातार बढ़ाया है।

नीदरलैंड के बाज़ारों की मांग बड़ी सीमा तक स्थानीय उत्पादन से पूरी होती है किन्तु आयात का महत्त्व बढ़ रहा है। आयात नीदरलैंड के व्यापार को पूरे वर्ष के दौरान अपने यूरोपीय ग्राहकों को कटे हुए फूलों की विस्तृत श्रृंखला की आपूर्ति करने में समर्थ बनाते हैं। अत्यधिक महत्त्वपूर्ण आयात में शीतकालीन मौसम में कटे हुए फूल तथा चुनिंदा फूल शामिल हैं। जिन्हें अन्य देशों में अधिक सफलतापूर्वक तथा या प्रतिस्पर्धी रूप से पैदा किया जा सकता है। आयात किये गये कटे हुए फूलों का भारी हिस्सा पुनः निर्यात किया जाता है।

विकासशील देशों की भूमिका

विकासशील देशों से यूरोपीय संघ के बाज़ारों में कटे हुए फूलों तथा पर्णावली के आयात में पिछले कुछ दशकों में काफी वृद्धि हुई है। 2003 में विकासशील देशों से आयात • 579 मिलियन था जिसका कटे हुए फूलों तथा पर्णावली के कुछ यूरोपीय संघ आयात में 19% हिस्सा आता है। विकासशील देश पूरे यूरोप में आयातित फूलों के वितरण में अपनी व्यापक व्यापारिक भूमिका के कारण नीदरलैंड आयात बाज़ार में पारंपरिक रूप से मज़बूत स्थिति में है। केन्या, कोलम्बिया, एक्वाडोर तथा ज़िम्बाब्वे यूरोपीय संघ को कटे हुए फूलों तथा पर्णावली के शीर्ष दस आपूर्तिकर्ता देशों में शामिल हैं।

यूरोपीय संघ को अग्रणी विकासशील देश आपूर्तिकर्ता (विकासशील देशों से कुल आयात का %), 2003

- डायनथुस : कोलम्बिया (74%), केन्या (11%)
- रोज़ा : केन्या (43%), एक्वाडोर (19%), ज़िम्बाब्वे (16%)
- आर्किड्स : थाइलैंड (91%), कोलम्बिया (3%)
- ग्लैडियोलस : कोलम्बिया (71%), थाइलैंड (13%)
- डेंड्रानथमा : दक्षिण अफ्रीका (33%), कोलम्बिया (31%)
- अन्य ताज़ा कटे हुए फूल : केन्या (31%), ज़िम्बाब्वे (22%), एक्वाडोर (20%)
- तैयार किये गये कटे हुए फूल : केन्या (43%), भारत (12%), चीन (11%)
- पर्णावली : भारत (36%), चीन (21%), दक्षिण अफ्रीका (15%)
- कुल कटे हुए फूल तथा पर्णावली : केन्या (31%), कोलम्बिया (18%), एक्वाडोर (14%)

स्रोत : यूरोस्टैट (2004)

डायनथुस, डेंड्रानथमा, आर्किड तथा ग्लैडियोलस के साथ गुलाब का यूरोपीय संघ के बाज़ार में प्रमुख स्थान है। प्रमुख उष्णकटिबंधीय फूलों में आर्किड, एंथुरियम, जिंजर्स, स्टेलिटजिया (पक्षी लोक), हेलिकोनियस तथा प्रोटीज शामिल हैं जो विशेषकृत आयातकों द्वारा वितरित किये जाते हैं जो अनुकूल तापमान वितरण माध्यमों के साथ कार्य करते हुए उष्णकटिबंधीय फूलों तथा पर्णावली को सामान्यतः एक साथ मिलते हैं। अन्य विशिष्ट उत्पादों में गर्मी के फूल, बुके तथा तैयार किये गये कटे हुए फूल शामिल हैं।

विकासशील देशों से यूरोपीय संघ बाज़ार में पर्णावली के आयात में भारत का लगभग 36% योगदान है। भारत नीदरलैंड को पर्णावली, तैयार किये गये कटे हुए फूलों तथा ग्लैडियोलस का अग्रणी आपूर्तिकर्ता है जिनका विकासशील देशों से नीदरलैंड के कुल आयात में क्रमशः लगभग 18%, 35% तथा 26% योगदान है।

निष्कर्ष

कटे हुए फूलों के बाज़ार में उत्पाद समूहों की एक श्रृंखला शामिल है जो विकासशील देशों को संभावित आपूर्तिकर्ता के रूप में विविध अवसर प्रदान करती है। विभिन्न कटे हुए फूलों तथा पर्णावलीयों की मांग यूरोप में विशेषकर विशिष्ट तथा अनूठे उत्पादों, ग्रीष्मकालीन फूलों, तैयार किये गये (विरंजित या सुखाये गये) कटे हुए फूलों, बेमौसमी फूलों तथा छोटी पत्तियों की पर्णावली के लिए अब भी बढ़ रही है।

यह एक अत्यधिक प्रतिस्पर्धी बाज़ार है जहां आयातक लगातार नये, विशिष्ट तथा अलग उत्पादों की तलाश में रहते हैं। विकासशील देशों के लिए प्रमुख खतरा व्यवस्था-तंत्र की समस्या के कारण उनकी खराब छबि, व्यावसायिकता का अभाव तथा खराब वाणिज्यिक व्यवहार है। कुछ देशों में राजनीतिक अस्थिरता भी इस प्रभाव में योगदान कर रही है। अतएव प्रतिस्पर्धी रहने के उद्देश्य से विकासशील देशों के निर्यातकों को एक समान गुणवत्ता के उत्पादों की नियमित रूप से आपूर्ति करने में समर्थ होना चाहिए।

स्रोत:

- विकासशील देशों से आयात के संवर्धन हेतु केन्द्र (सी बी आइ), नीदरलैंड

कृषि-व्यापार, कृषि-निर्यात और कृषि-वित्तपोषण से संबंधित विषयों पर आप एग्जिम बैंक के अधिकारी के साथ www.eximbankagro.com ऑन लाइन पर मंगलवार और शुक्रवार को 4.00 बजे से 5.00 बजे (आइ एस टी) अपराह्न के मध्य, विचार - विमर्श कर सकते हैं।

कृषि निर्यात क्षेत्र : अद्यतन जानकारी

भारत से कृषि निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मार्च 2001 में भारत सरकार ने देशभर में कृषि निर्यात क्षेत्रों (ए ई जेड) की स्थापना करने की एक नीति घोषित की। आज की तारीख में केन्द्र सरकार ने अपने विभिन्न विभागों के माध्यम से 60 कृषि निर्यात क्षेत्रों को मंजूरी दी है। जिसमें लगभग 40 कृषि जिनसे संबंधित हैं। ये कृषि निर्यात क्षेत्र देश के 20 राज्यों में फैले हुए हैं।

कृषि निर्यात क्षेत्रों की स्थापना का उद्देश्य भारत से कृषि जिनसे के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न केन्द्र तथा राज्य सरकारों के विभिन्न विभागों द्वारा अब तक किये गये प्रयासों को संगठित करना है। कृषि निर्यात क्षेत्रों की संकल्पना कच्चा माल विकसित करने तथा उन्हें प्राप्त करने, उनके संसाधन तथा पैकेजिंग के लिए भौगोलिक रूप से संगत क्षेत्र

में स्थित किसी विशिष्ट उत्पाद का एक व्यापक दृष्टिकोण रखती है जिससे निर्यात हो। संपूर्ण प्रयास संभावित उत्पादों, भौगोलिक क्षेत्र, जिनमें ये पैदा किये जाते हैं, की पहचान करने में एक समूह दृष्टिकोण और उत्पादन चरण लेकर उसके उपभोग चरण एक संपूर्ण प्रक्रिया को एकीकृत करने के आद्योपांत दृष्टिकोण अपनाने पर केन्द्रित है।

सरकार द्वारा मंजूर कृषि निर्यात क्षेत्रों में 5 वर्ष की अवधि में 1717.95 करोड़ रुपये का निवेश और 11821.47 करोड़ रुपये का निर्यात शामिल है। इन अनुमानों की तुलना में इन कृषि निर्यात क्षेत्रों में अब तक पिछले साढ़े तीन वर्षों में 449.90 करोड़ रुपये का निवेश किया है और 2768.00 करोड़ रुपये का निर्यात किया है।

60 कृषि निर्यात क्षेत्रों का राज्यवार ब्यौरा नीचे दिया गया है :

राज्य	मुख्य उत्पाद	भौगोलिक क्षेत्र
आंध्र प्रदेश	आम का गूदा व ताज़ा सब्जियां	चित्तूर
	आम व अंगूर	रंगारेड्डी, मेडक तथा महबूब नगर
	आम	कृष्णा जिला
	खीरा	महबूब नगर, रंगारेड्डी, मेडक, करी नगर, वारंगल, अनंतपुर तथा नालगोंडा
	मिर्च	गुंटूर
असम	ताजा तथा संसाधित अदरक	कामरूप, नालबारी, बारपेटा, दरांग, नगाव, मोरीगांव, कारबी अंगलांग तथा उत्तर कछार
बिहार	लिची, सब्जियां तथा शहद	मुजफ्फरपुर, समस्तीपुर, हाजीपुर, वैशाली, पूर्व तथा पश्चिम चंपारन, भागलपुर, बेगूलसराय, खगाड़िया, सितामढी, सारंग तथा गोपालगंज
गुजरात	आम व सब्जियां	अहमदाबाद, खेडा, अनंत, बडोदरा, सूरत, नवसारी, वहसाड, भरूच तथा नर्मदा
	निर्जलित प्याज़ तथा लहसून	भावनगर, सुरेन्द्रनगर, आमरेली, राजकोट, जूनागढ़ तथा जामनगर
	तिल	अमरेली, भावनगर, सुरेन्द्रनगर, राजकोट तथा जामनगर
हिमाचल प्रदेश	सेब	किन्नोर, शिमला, शिरमोर, कुलु, मंडी तथा चम्बा
जम्मू व कश्मीर	सेब	श्रीनगर, बारमुला, अनंतनाग, कुपवाड़ा, बदगाम तथा फुलवाना
	अखरोट	बारमुला, अनंतनाग, फुलवाना, बरगाम, कुपवाडा, श्रीनगर, डोडा, पुंछ, उधमपुर, राजौरी तथा कथुआ
झारखंड	सब्जी	रांची, हजारीबाग तथा लोहारदागा
कर्नाटक	खीरा	तुमकुर, बेंगलोर (शहरी), बेंगलोर (ग्रामीण), हसन, कोलार, चित्रदुर्ग, धारवाड़ तथा बागलकोट
	रोज़ ओनियन	बेंगलोर (शहरी), बेंगलोर (ग्रामीण) कोलार
	पुष्प	तुमकुर, बेंगलोर (शहरी), बेंगलोर (ग्रामीण), कोलार, कोडागु तथा बेलगाम
	वेनिला	दक्षिण कन्नड, उत्तर कन्नड, उडुपि, शिमोगा, कोडागु तथा चिकमगलूर
केरल	बागबानी उत्पाद	त्रिशूर, एर्णाकुलम, कोट्टयम, आलपुषा, पाथनुमथिट्टा, कोल्लम, तिरुवनंतपुरम, इडुकी तथा पालक्काड
	औषधि पौधे	वायनाड, मल्लापुरम, पालक्काड, त्रिशूर, एर्णाकुलम, इडुकी, कोल्लम, पाथनुमथिट्टा तथा तिरुवनंतपुरम
मध्य प्रदेश	आलू, प्याज़ तथा लहसुन	मालवा, उज्जैन, इन्दौर, देवास, धार, साजापूर, रतलाम, निमज तथा मंदसौर

	बीज, मसाले	गुना, मससोर, उज्जैन, रायगढ़, रतलाम, साजापुर तथा निमज
	गेहूं	उज्जैन, निमज रतलाम, मंदसौर, इन्दौर, धार, साजापुर, देवास, भोपाल, सिहोर, विदिशा, होशंगाबाद, हरदा तथा नरसिंहपुर
	संतरा	छिंदवाडा, होशंगाबाद तथा बेतु
	मसूर व उड़द	शिवपुरी, गुना, विदिशा, रायसेन, नरसिंहपुर तथा छिंदवाडा
महाराष्ट्र	अंगूर तथा द्राक्ष लता	नासिक, सांगली, पुणे, सातारा, अहमदनगर तथा सोलापुर
	हापुस आम	रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, रायगढ़ तथा ठाणे
	केसर आम	औरंगाबाद, जालना, बीड, लातूर, अहमदनगर तथा नासिक
	पुष्प	पुणे, नासिक, कोल्हापूर तथा सांगली
	प्याज	नासिक, अहमदनगर, पुणे, सातारा तथा सोलापुर
	अनार	सोलापुर, सांगली, अहमदनगर, पुणे, नासिक, उस्मानाबाद, लातूर
	केला	जलगाव, धुले, नांदुरबाग, बुलढाणा, परभणी, हींगोली, नांदेड तथा वर्धा
	संतरा	नागपुर तथा अमरावती
ओडिसा	अदरक तथा हल्दी	कंधमाल
पंजाब	सब्जी	फतेहगढ़ साहिब, पटियाला, संगरूर, रोपड़ तथा लुधियाना
	आलू	सिंगपुरा, जिराकपुर (पटियाला), रामपुरा फुल, मुक्तसर, लुधियाना, जालंधर
	बासमती चावल	अमृतसर, गुरुदासपुर, कपूरथला, जालंधर, होशियारपुर, नवानशहर
राजस्थान	धनिया	कोटा, बंडी, बारन, छालवाड तथा चित्तौड
	जीरा	नागौर, बारमेर, जालोर, पाली तथा जोधपुर
सिक्किम	पुष्प (आर्किड) तथा चेरी पेपर	पूर्वी सिक्कीम
	अदरक	उत्तर, पूर्व, दक्षिण व पश्चिम सिक्किम
तमिल नाडु	काजू	कडल्लूर, तंजाउर, पुदुकोट्टै तथा शिवगंगा
	पुष्प	धर्मपुरी
	पुष्प	नीलगिरी
	आम	मदुरै, थेनी, दिंडीगुल, विरुद्धनगर, तिरुनेलवेली
त्रिपुरा	आर्गेनिक अनन्नास	कुमारघाट, मनु, मेलाघर, माताबारी तथा काबराबैन ब्लॉक
उत्तर प्रदेश	आलू	आगरा, हाथरस, फरुखाबाद, कन्नौज, मेरठ, अलीगढ़ तथा बागपथ
	आम तथा सब्जियां	लखनऊ, उन्नाव, हरदोई, सीतापुर तथा बाराबंकी
	आम	सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, मेरठ, बागपथ तथा बुलंदशहर
	बासमती चावल	बरेली, शहाजहांपुर, पीलीभीत, रामपुर, बदायूं, बिजनौर, मुरादाबाद, जेबीफुलेनगर, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बुलंदशहर, गाज़ियाबाद
उत्तरांचल	लीची	उद्धमसिंह नगर, नैनीताल तथा देहरादून
	पुष्प	देहरादून तथा पंतनगर
	बासमती चावल	उद्धमसिंह नगर, नैनीताल, हरिद्वार तथा देहरादून
	औषध तथा सुगंध पौधे	उत्तरकाशी, चमौली, पिथौरागढ़, देहरादून तथा नैनीताल
पश्चिम बंगाल	अनन्नास	दार्जिलिंग, उत्तर दिनाजपुर, कूच बिहार तथा जलपाईगुडी
	लीची	मुर्शिदाबाद, मालदा, 24 परगना (उत्तर) तथा 24 परगना (दक्षिण)
	आलू	हुगली, बर्दवान, मिदनापुर (पश्चिम), उदय नारायणपुर तथा हावड़ा
	आम	मालदा तथा मुर्शिदाबाद
	सब्जी	नादिया, मुर्शिदाबाद तथा उत्तर 24 परगना
	दार्जिलिंग चाय	दार्जिलिंग

संदर्भ:

- ए पी ई डी ए
- वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार

किरणन प्रौद्योगिकी : एक आश्चित्र (स्नेपशॉट)

खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ ए ओ) के एक अनुमान के अनुसार, विश्व खाद्य उत्पादन का लगभग 25-30% पीड़क जंतुओं, कीड़ों, बैक्टेरिया, फफूँदी और किण्वक (इंजाइम) के कारण नष्ट हो जाता है जो फसलों को खाते हैं, निम्नकोटिकृत या नष्ट कर देते हैं। भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बी ए आर सी) के अनुमान के अनुसार, भारत प्रति वर्ष 10,000 करोड़ रुपये मूल्य के अनाजों तथा दलहनों का नुकसान उठा रहा है। भारत को (20-30%) प्रसंस्करण तथा इष्टतम भंडारण सुविधाओं के अभाव के कारण फलों तथा सब्जियों की विशाल फसल पश्चात हानि भी उठानी पड़ रही है। इस मात्रा में खाद्य की हानि और अंतरराष्ट्रीय व्यापार में कठोर खाद्य सुरक्षा मानकों को ध्यान में रखते हुए किरणन प्रौद्योगिकी न केवल खाद्य उत्पादों के परिरक्षण में बल्कि कुछ खाद्य जनित रोगों की घटना को कम करने में भी पर्याप्त सुधार की आशा दिखाती है। खाद्य किरणन खाद्य को जीवाणु मार की कमी, रोगजनकों के विनाश, उत्पाद की शेल्फ लाइफ के विस्तार तथा/या उत्पाद के विसंक्रमण के प्रयोजनार्थ आयतीकरण किरणन के एक नियंत्रित स्रोत में उद्भासित करने की एक प्रक्रिया है। खाद्य की किरणन प्रक्रिया खाद्य संरक्षण को मजबूत बनाती है, खाद्य-स्वास्थ्य में सुधार करती है और खाद्य निर्यात को संगरोध अवरोधों को पार करने में सहायता करती है। यह खाद्य की पैकिंग, भंडारण, परिवहन तथा वितरण को सुगम बनाता है।

प्रौद्योगिकी

आयतीकरण प्रौद्योगिकी में किरणक नामक एक सुविधा के अंतर्गत इलेक्ट्रॉन किरण तथा एक्स-रे द्वारा उत्पन्न गामा तथा बीटा किरणों में खाद्य को उद्भासित करना शामिल है जिसके द्वारा जीवाणु डी एन ए अणु को तोड़ा जाता है और जीवाणु मर जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू एच ओ), एफ ए ओ, संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं औषधि प्रशासन (यू एस एफ डी ए), अंतरराष्ट्रीय परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बी ए आर सी), मुंबई तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार से रिपोर्टें इस बात की पुष्टि करती हैं कि अधिकतम 10 के जी वाइ तक किरणित खाद्य मानव उपभोग के लिए सुरक्षित है।

नियामक स्थिति

यू एस एफ डी ए किरणन को इस तर्क पर एक खाद्य योज्य के रूप में मूल्यांकित करता है कि यह खाद्य की विशेषता को प्रभावित करता है या खाद्य का एक घटक हो जाता है, तथापि खाद्य में भौतिक रूप से कुछ भी नहीं जुड़ता है। एफ डी ए की नामपत्रण (लेबलिंग) आवश्यकता 'रेड्यूरा' के समावेश की मांग करती है जो खाद्य का किरणित होना सूचित करने के लिए विकसित किया गया एक 'प्रतीक' है। जब तक 'किरणित' शब्द उत्पाद के नाम का हिस्सा न हो, 'किरणन से प्रसंस्कृत' या 'किरणन द्वारा प्रसंस्कृत' शब्द पैकेट पर छापे जाने चाहिए।

वर्तमान स्थिति

विश्व भर में भारत सहित 42 से अधिक देशों ने 100 से अधिक खाद्य मदों के लिए किरणन का अनुमोदन किया है और इनमें से 30 देश वाणिज्यिक व्यवहार्यता के लिए आवेदन कर रहे हैं। चीन में इस समय किरणन प्रयोग के लिए 40 केन्द्र हैं और भारत में निजी क्षेत्र में दो केन्द्रों सहित 14 केन्द्र हैं। भारत में बी ए आर सी ने किरणन द्वारा खाद्य के परिरक्षण पर व्यापक अनुसंधान तथा विकास कार्य किये हैं। परमाणु ऊर्जा मंत्रालय के बोर्ड ऑफ रैडिएशन एण्ड आइसोटोप टेक्नोलॉजी (बी आर आइ टी) ने 30 टन प्रतिदिन की प्रारंभिक उत्पादन क्षमता के साथ नवी मुंबई में मसालों के किरणन प्रसंस्करण के लिए एक सुविधा की स्थापना की है। 10 टन प्रति घंटे की प्रसंस्करण क्षमता के साथ प्याज तथा आलू के संसाधन के लिए एक वाणिज्यिक प्रदर्शन किरणक महाराष्ट्र के नासिक जिले में लासलगांव में स्थापित किया गया है और यह परिचालन कार्य कर रहा है। थ्रूपुट में परिवर्तन के साथ अन्य खाद्यों के हल्के खुराक के किरणन प्रसंस्करण के लिए इसी संयंत्र का उपयोग करने का प्रस्ताव है।

भारत में प्रसंस्कृत खाद्य के किरणन के लिए अनुमत सीमाएं

खाद्य मद	किरणन खुराक (के जी वाई)		उद्देश्य
	न्यूनतम	अधिकतम	
प्याज	0.03	0.09	अंकुरण अवरोध
आलू	0.06	0.15	अंकुरण अवरोध
छोटे प्याज, लहसुन, अदरक	0.03	0.15	अंकुरण अवरोध
चावल, सूजी या रवा, आटा (गेहूँ का आटा) और मैदा (परिष्कृत गेहूँ का आटा)	0.25	1.0	कीटाणु विसंक्रमण
दालें	0.25	1.0	कीटाणु विसंक्रमण
सुखाये गये समुद्री खाद्य-पदार्थ	0.25	1.0	कीटाणु विसंक्रमण
किशमिश, सुखाया अंजीर तथा खजूर	0.25	0.75	कीटाणु विसंक्रमण
आम	0.25	0.75	शेल्फ लाइफ में वृद्धि तथा निर्यात व्यापार के संगरोधन अभिक्रिया
चिकन सहित मांस तथा मांस उत्पाद	2.5	4.0	शेल्फ लाइफ में वृद्धि तथा रोगजनक नियंत्रण
मसाले	6.0	14.0	सूक्ष्मजीवाणु विसंक्रमण
ताज़ा समुद्री खाद्य-पदार्थ	1.0	3.0	शेल्फ लाइफ में वृद्धि
प्रोजेन समुद्री खाद्य पदार्थ नियंत्रण	4.0	6.0	सूक्ष्म जीवाणु रोगजनक नियंत्रण

स्रोत: भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, भारत

किरणन भंडारण हानि को कम करते हुए खाद्य-पदार्थों के बाज़ार मूल्य पर स्थिरीकरण प्रभाव डाल सकता है जिसके फलस्वरूप उत्पाद की वर्धित उपलब्धता रहेगी। किरणन लागत हल्की खुराक के प्रयोग जैसे आलू तथा प्याज के अंकुरण अवरोध और अनाज तथा दलहनों में कीटाणु विसंक्रमण के लिए 0.25 रुपये से 0.50 रुपये प्रति किग्रा और उच्च खुराक प्रयोग जैसे सूक्ष्म जीवाणु विसंदूषण के लिए मसालों की अभिक्रिया के लिए 1 रुपये से 3 रुपये प्रति किग्रा हो सकती है। लागत को वर्ष भर में विभिन्न प्रकार के उत्पादों संसाधन करने वाली एक बहु उद्देश्यीय सुविधा में लागत को कम किया जा सकता है।

अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें :

प्रमुख, खाद्य प्रौद्योगिकी डिवीजन,

भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र,

ट्राम्बे, मुंबई - 400 085.

ई-मेल : ftd@magnum.barc.ernet.in

foodbase@apsara.barc.ernet.in

भारतीय आंचलिक खान-पान उत्पादों की निर्यात संभाव्यता

भारत, जहाँ बड़ी संख्या में समुदाय की विविधतापूर्ण संस्कृति और खान-पान की आदतें हैं, विश्व भर में विभिन्न स्वाद कलियों के लिए उपयुक्त विविध प्रकार के खाद्य तथा खाद्य उत्पाद उपलब्ध कराता है। मसालों का निर्यात करने और करी में उनका इस्तेमाल करने का भारत का इतिहास पुराना है। खाद्य भंडारण, पैकेजिंग तथा परिवहन में प्रौद्योगिकी के उन्नयन से अब यह समय आ गया है कि इन आंचलिक खान-पान उत्पादों को विश्वभर में न केवल भारतवंशियों को बल्कि विदेशों में स्थानीय निवासियों को भी उपलब्ध कराया जाए। हाल में, ये उत्पाद मुख्यतः सुविधाजनक आहार के रूप में जैसे बना बनाया रूप (विभिन्न प्रकार की करी) तथा परिरक्षित रूप (अचार, मुरब्बा आदि) में निर्यात किये जा रहे हैं।

आंचलिक खान-पान ऐसे खाद्य उत्पाद हैं जो स्रोत देश की संस्कृति और परम्परा को दर्शाते हैं। मूल निवासियों के अन्य देशों में प्रवसन और बसे हुए देश में पारंपरिक खान-पान प्राप्त करने की इच्छा से आंचलिक खान-पान उत्पादों के निर्यात के भरपूर अवसर हैं। ये उत्पाद प्रशीतलित तैयार भोजन (बनी बनायी करी), संलग्न वस्तु जैसे बाइट आकार के स्नैक (भुजिया, मिक्सचर तथा प्रान कैंकर्स), प्रोजेन बना बनाया भोजन तथा आंचलिक चटनी (चटनी तथा आचार और सोया चटनी) के रूप में हो सकते हैं।

चूंकि उपभोक्ता अपने स्वाद में अधिक उत्साही बनते जा रहे हैं, आंचलिक खान-पान अब वैश्विक खाद्य बाज़ार का हिस्सा बन रहे हैं।

कई देशों में चीन, भारत, मेक्सिको जैसे स्थानों से रेसिपी में उपभोक्ता रुचि निरंतर बढ़ रही है। खाद्य सेवा क्षेत्र आंचलिक खान-पान के लिए खुदरा बाज़ार में प्रवृत्तियों का एक महत्वपूर्ण संवाहक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जहां तक आंचलिक रेसिपी तथा पकवानों का संबंध है, रेस्तरां, टेकअवे तथा ऐसे अन्य आउटलेट अब भी उपभोक्ताओं के लिए संदर्भ के मुख्य बिंदु हैं। भारतीय आंचलिक खान-पान के वैश्विक बाज़ार के आकार से संबंधित आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, कुछ निजी अनुसंधान फर्मों में उपलब्ध आंकड़े यह सूचित करते हैं कि यू के भारतीय जातिगत आहार का बाज़ार आकार 2003 में लगभग 613 मिलियन पौंड रहने का अनुमान है। यह वृद्धि मुख्यतः शीतित तैयार भोजन तथा भोजन संलग्न वस्तुओं जैसे नान ब्रेड, शीतित रुचिवर्द्धक तथा पोप्पाडम की बढ़ोतरी हुई है। बाज़ार सदा व्यापक होती उत्पाद पसन्द तथा नये उत्पाद और सेवा संकल्पनाओं जैसे इन-स्टोर टेकअवे, जिनकी लोकप्रियता बढ़ रही है और जिनसे रेस्तरां टेकअवे क्षेत्र को चुनौती मिलनी शुरू हो गयी है, दोनों दृष्टियों से तेज़ी से बदल रहा है। यद्यपि यू के में भारतीय जातिगत खाद्य उत्पादों का बाज़ार आकार लगातार बढ़ रहा है, इसे चीनी, मेक्सिकन, जापानी और थाई खाद्यों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। बाज़ार में नये आंचलिक खान-पान का चलन बढ़ रहा है, उपभोक्ता कम ब्रांड रायल हो रहे हैं जो बदले में सभी आंचलिक खाद्य उत्पादों के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ाता है।

निकटतम निर्यात स्थान जैसे मध्य पूर्व देश से लेकर दूरस्थ निर्यात स्थानों जैसे यू एस ए, यू के तथा कुछ अफ्रीकी देशों जैसे मारिशस तक विश्व भर में 20 मिलियन से अधिक भारतवंशियों हैं जिनके चलते विश्व भर में भारतीय आंचलिक खान-पान की मांग में कोई संदेह नहीं है। भारतीय आंचलिक खान-पान इन देशों के स्थानीय निवासियों में लगातार लोकप्रिय हो रहा है। सुविधा, किसी आंचलिक खान-पान की सफलता में प्रमुख कारक, विदेशों में बसे भारतीयों तथा स्थानीय निवासियों की अभिरुचियों को पूरा करने वाले आंचलिक खान-पान के भारतीय निर्यातकों तथा निर्माताओं के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय होगा। भारतीय आंचलिक खान-पान की महत्ता प्रारूप खाद्य प्रसंस्करण नीति 2005, भारत सरकार द्वारा दिये गये कथन से आंकी जा सकती है।

भारत में विभिन्न प्रकार की खान-पान आदतें और खाद्य उत्पाद उपलब्ध हैं। ऐसे उत्पादों तथा प्रक्रियाओं को दस्तावेज़ों में दर्ज करने, जहां आवश्यक हो उनमें सुधार करने और पेटेंट करने की आवश्यकता है। आंचलिक खान-पान पर आर एण्ड डी न केवल क्षेत्रीय ज़रूरतों को पूरा करेगा बल्कि विशाल भारतवंशियों में बाज़ार खोलेगा।

संदर्भ:

- खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय, भारत सरकार
- www.marketresearch.com
- www.preparedfoods.com

समाचार संकेन्द्रण

वर्ष 2004-05 के लिए यू एस में सोयाबीन का रिकॉर्ड उत्पादन

यू एस डी ए के एक अद्यतन अनुमान के अनुसार वर्ष 2004-05 के लिए यू एस तिलहन उत्पादन पिछले वर्ष से 20 मिलियन टन अधिक बढ़कर 96.6 मिलियन टन के स्तर पर पहुँच सकता है। यू एस डी ए का कहना है कि सोयाबीन, कनोला, कपास तथा मूंगफली का वर्धित उत्पादन वृद्धि को संचालित करेगा। सोयाबीन का उत्पादन 85.5 मिलियन टन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुँचने का अनुमान है। सोयाबीन की पेराई 408,000 टन हो सकती है क्योंकि यू एस डी ए 2004-05 में उच्च सोयाबीन बीज तथा तेल निर्यात की आशा करता है। यू एस डी ए द्वारा सोयाबीन का भंडार 11.8 मिलियन टन तक पहुँच जाने का अनुमान लगाया गया है।

यू एस डी ए ने वर्ष 2004-05 में विश्व तिलहन उत्पादन 391.4 मिलियन टन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुँचने का अनुमान किया है। यू एस डी ए द्वारा वर्ष 2004-05 के लिए गैर-यू एस तिलहन उत्पादन 294.8 मिलियन टन रहने का अनुमान किया गया है।

स्रोत: दि अमेरिकन सोयाबीन एसोसिएशन वीकली अपडेट, 17 जनवरी 2005

अनुसंधान से आर्गेनिक दूध के स्वास्थ्य लाभ का पता चलता है

आर्गेनिक दूध के स्वास्थ्य लाभ पर नये अनुसंधान के आलोक में उसकी बिक्री में वृद्धि हो सकती है। वैज्ञानिकों ने यह खोज की है कि इसमें विटामिन ई के उच्च स्तर, एंटीआबसीडेंट तथा ओमेगा 3 अनिवार्य वसीय एसिड होते हैं।

डैनिश इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज के एक वरिष्ठ बायोकैमिस्ट जैकब हाल्म ने आर्गेनिक रूप से पाली गई गायों की खोज की है जो ताज़ा घास, तिपतिया चरागाह तथा घास तिपतिया साइलो भारी मात्रा में खाती हैं और ऐसा दूध देती हैं जो पारंपरिक दूध से विटामिन ई में औसतन 50% अधिक होता है। दूध बिटा कैरोटीन में भी 75% अधिक है जिसे शरीर विटामिन ए में परिवर्तित करता है और गैर-आर्गेनिक दूध की तुलना में एंटीआक्सीडेंट्स ल्यूटीन तथा जीक्सानथीन में दो से तीन गुना अधिक है।

यहाँ प्रकाशित समाचार और सूचनाएँ ऐसे विभिन्न स्रोतों से ली गई हैं, जो कि विश्वसनीय माने जाते हैं। हालाँकि प्रकाशित सामग्री की सत्यता और वस्तुनिष्ठता के विषय में हर संभव प्रयास किया गया है, फिर भी इनकी प्रामाणिकता और शुद्धता के संबंध में एकिज़म बैंक की कोई ज़िम्मेदारी नहीं होगी।

भारतीय निर्यात-आयात बैंक, केन्द्र एक भवन, 21 वीं मंज़िल, विश्व व्यापार केन्द्र संकुल, कफ़ परेड, मुंबई - 400 005. संपर्क टेली नं. 22185272 फ़ैक्स: 22182572 ई-मेल: eximcord@vsnl.com कृषि व्यापार समूह, ई-मेल: agrigroup@eximbankindia.com/sailesh@eximbankindia.com

संपर्क नम्बर: अहमदाबाद: 2657 6852, बैंगलोर: 2558 5755, चैन्नई: 2522 4714, गुवाहाटी: 2599135, हैदराबाद: 2330 7816, कोलकाता: 2229 3416, मुंबई: 2283 0761, नई दिल्ली: 2332 6375, पुणे: 2645 8599, बुडापेस्ट: (00361) 338 2833, जोहानिसबर्ग: (002711) 442 8010, मिलान: (003902) 584 30546, सिंगापोर: (0065) 653 26464, वाशिंगटन डी. सी.: (001) 202-223 3238.

अपेक्षित प्रीमियम पाने में असफल होने के बाद कुछ उत्पादक पारम्परिक दूध की ओर वापस आ गये हैं। किन्तु बाज़ार कुछ संसाधकों की सफलता की बदौलत लगातार मज़बूत हुआ है जिन्होंने आर्गेनिक दही तथा अन्य डेरी उत्पादों को शीर्ष बिक्री श्रेणी में ला दिया है।

स्रोत: <http://www.organicmonitor.com/January 7, 2005>

चीन के कृषि निर्यात में निरंतर वृद्धि

चीन सरकार द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, कृषि उत्पादों, विशेषकर उच्च मूल्य के कृषि उत्पादों का निर्यात 2004 में लगातार बढ़ा है। बागान, पोल्ट्री, जलीय तथा समुद्र खाद्य उत्पादों, जिनमें 12.17 बिलियन यू एस डॉलर की वृद्धि दर्ज की गई है, का 2004 के पहले 10 महीनों में कुल कृषि निर्यात उत्पादों में 67.7% हिस्सा था। 30 में से 26 निर्यात उत्पादों की कीमतें पहले 10 महीनों में लगातार बढ़ी है।

टेक्नोलॉजी के प्रयोग से फॉर्म उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। अतएव, पशुओं से प्राप्त सभी उत्पाद, पोल्ट्री को छोड़कर यूरोपीय संघ के देशों द्वारा निर्दिष्ट कठोर मानदंडों को सफलतापूर्वक पूरा कर रहे हैं। 8 वर्षों के प्रतिबंध के बाद मध्य पूर्व के बाज़ारों में जीवित भेड़ों तथा पशुओं की बिक्री पुनः आरंभ हो रही है। पहली बार चीनी सेब का लैटिन अमेरिकी बाज़ार में प्रवेश मिला।

विदेशी निधिक उद्यम तथा निजी व्यावसायिक घराने फार्म उत्पादों के मुख्य निर्यातक हो गये हैं। फार्म उत्पादों के निर्यात की निरंतर वृद्धि पक्षी फ्लू के फैलाव को नियंत्रित करने और निर्यात प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन प्रदान करने के प्रयासों से संभव हो पायी है। चीन ने कूटनीतिक प्रयासों के माध्यम से जापान तथा दक्षिण कोरिया को पोल्ट्री का निर्यात पुनः शुरू कर दिया है। कृषि उत्पादों के निर्यात के बारे में समय पर जानकारी प्रदान करने के लिए संबंधित विभागों ने कृषि उत्पादों के निर्यात पर मासिक सांख्यिकीय रिपोर्ट प्रकाशित करना और उनमें सुधार लाना जारी रखा है।

स्रोत: चाइना डेली (<http://www.chinadaily.com>)

